Yatharth, Vol. 2, Issue 1 (Jan.-Jun. 2026) 261002 (8pp)

भारत-चीन आर्थिक संबंधों में व्यापारिक असंतुलन, निर्भरता और चुनौतियां

रितिक रितिक[1,*] | सुनील कुमार जांगिड़[1] | कपिल कुमार आनंद[2]

[1]कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, जयपुर – 303305, राजस्थान (भारत)
[2]राजनीति विज्ञान विभाग, एस. एस. जैन सुबोध पी. जी. कॉलेज, जयपुर – 302004, राजस्थान (भारत)

*Corresponding author email: ritik892920@gmail.com

शोध सार: भारत और चीन एशिया में स्थित दो पड़ोसी देश हैं, जो लगभग 3488 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं। दोनों ही देश विश्व स्तर पर उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ हैं। इस अध्याय में भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों में असंतुलन तथा आर्थिक क्षेत्र के संदर्भ में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन किया जाएगा। भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंधों में द्विपक्षीय व्यापार में असंतुलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारत चीन से अधिक आयात करता है, जबकि कम निर्यात करता है, जिसके परिणामस्वरूप चीन पर भारत की निर्भरता निरंतर बढ़ रही है। वर्ष 2023 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 136.22 अरब डॉलर तक पहुँच गया था, जिसमें लगभग 100 अरब डॉलर का निर्यात चीन द्वारा किया गया था। ये आँकड़े भारत की चीन पर बढ़ती निर्भरता को दर्शाते हैं, जो भारत के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बनती जा रही है। इसके समाधान हेतु भारत ने व्यापारिक असंतुलन और बढ़ती निर्भरता को ध्यान में रखते हुए पी. एल. आई. (Production Linked Incentive) जैसी योजना अपनाई है, जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके अतिरिक्त, भारत ने यूरोप जैसे देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों और सहयोग को भी आगे बढ़ाया है, जिसमें तकनीक, कच्चे माल आदि के आदान-प्रदान पर ध्यान केंद्रित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन की नीतियाँ, चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सी. पी. ई. सी.) जैसी परियोजनाएँ, सीमा तनाव तथा गलवान घाटी की झड़प जैसी घटनाओं ने भारत और चीन के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को प्रभावित किया है, जिसके कारण विशेष रूप से आर्थिक संबंधों में उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। इसके परिप्रेक्ष्य में भारत ने समय-समय पर चीन के प्रति चिंता और अविश्वास व्यक्त किया है, और गलवान घटना के पश्चात भारत ने चीन के विरुद्ध कुछ प्रतिबंध भी लगाए, जिसके कारण भारत और चीन के आर्थिक संबंधों में गिरावट देखने को मिली। चीन के प्रति अविश्वास का एक प्रमुख कारण चीन–पाकिस्तान के बीच बढ़ती निकटता भी है। चीन अंतरराष्ट्रीय मंचों, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ में, पाकिस्तान का समर्थन करता रहा है, जिसके परिणामस्वरूप भारत–चीन संबंधों में स्थिरता कम तथा असंतुलन और तनाव अधिक दिखाई देता है।

कीवर्ड: भारत–चीन संबंध, द्विपक्षीय व्यापार, व्यापारिक असंतुलन, सीमा विवाद, आर्थिक निर्भरता, आत्मनिर्भर भारत

1. परिचय

भारत और चीन के संबंध एशिया ही नहीं, बल्कि विश्व राजनीति के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। चीन विश्व में एक महाशक्ति के रूप में उभरा है, जबकि भारत को विकास की दिशा में आगे बढ़ने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगा, जिसका कारण विकास के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन और उतार-चढ़ाव रहा है। चीन भारत का पड़ोसी देश है, जिसका क्षेत्रफल 9,596,960 वर्ग किलोमीटर है और यह विश्व का तीसरा सबसे बड़ा देश है [1]। वहीं भारत 3,287,263 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है [2]। ये दोनों पड़ोसी देश लगभग 3488 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं, जिसमें भारत के जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश राज्यों की सीमाएँ चीन के साथ लगती हैं [3]।

https://doi.org/10.5281/zenodo.18986520
Received: 30 January 2026 | **Revised:** 07 March 2026
Accepted: 10 March 2026 | **Published Online:** 17 March 2026

सन 1962 में भारत और चीन के बीच हुए युद्ध के पश्चात दोनों देशों के बीच सीमा विवाद उत्पन्न हुआ, जिसके कारण वर्तमान समय में भी दोनों देशों के बीच तनाव और विवाद की स्थिति बनी हुई है। इसके बावजूद भारत और चीन के बीच सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग के प्रयास भी दिखाई देते हैं। तथापि, इन सहयोगों पर सीमा विवाद के कारण समय-समय पर उतार-चढ़ाव देखने को मिलता रहा है।

भारत और चीन के आर्थिक संबंधों पर दृष्टि डालें तो दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो वर्तमान में लगभग 100 अरब डॉलर से अधिक हो चुका है। तथापि, इस व्यापार में असंतुलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारत चीन से अधिक आयात करता है, जबकि अपेक्षाकृत कम निर्यात करता है, जिसके कारण चीन पर भारत की आर्थिक निर्भरता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। भारत और चीन के बीच निरंतर तनाव तथा चीन पर बढ़ती निर्भरता भारत की वैश्विक स्थिति को भी प्रभावित करती है।

चीन पर निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से भारत ने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, मेडिकल उपकरणों तथा सोलर पैनलों आदि के घरेलू निर्माण को प्रोत्साहित करने का निर्णय लिया। इसी दिशा में मेड इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को सुदृढ़ करने हेतु पी. एल. आई. (Production Linked Incentive) योजना की शुरुआत की गई, जो भारत की अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत मानी जाती है। इसके अतिरिक्त, चीन पर निर्भरता कम करने और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारत ने विश्व के अन्य देशों के साथ रणनीतिक तथा व्यापारिक संबंधों को भी मजबूत किया है।

फिर भी, कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारत को चीन पर आंशिक रूप से निर्भर रहना पड़ता है, क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में भारत और चीन के बीच व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और चीन भारत के प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं में से एक है। चीन के स्थान पर किसी अन्य देश से समान वस्तुओं की आपूर्ति प्राप्त करना भारत के लिए अपेक्षाकृत अधिक महँगा पड़ सकता है। इस संदर्भ में केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के कई अन्य देश भी अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चीन पर निर्भर हैं।

1.1 संबंधित साहित्य की समीक्षा

अग्रवाल और घोष **[4]** के अनुसार, चीनी राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने के साथ-साथ मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने पर भी बल दिया गया, क्योंकि भारत और चीन के द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। सी. जी. ई. (Computable General Equilibrium) मॉडल के प्रयोग से यह निष्कर्ष निकाला गया कि भारत और चीन के मध्य आर्थिक व्यापार से प्रारंभिक स्तर पर लाभ अपेक्षाकृत सीमित होगा, परंतु दीर्घकाल में भारत के निर्यात में लगभग 57% तक वृद्धि की संभावना व्यक्त की गई है, जबकि चीन से आयात में लगभग 270% तक वृद्धि होने की संभावना बताई गई है।

सिंह **[5]** के अनुसार, चीन वन बेल्ट वन रोड परियोजना को व्यापक स्तर पर आगे बढ़ा रहा है। इस परियोजना के माध्यम से चीन का उद्देश्य यह है कि भारत चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सी. पी. ई. सी.) के माध्यम से स्थापित हो रहे चीन–पाकिस्तान सहयोग और क्षेत्रीय प्रभाव को स्वीकार करे। हालांकि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस परियोजना को स्वीकार नहीं किया और इसके प्रत्युत्तर में एशिया–अफ्रीका विकास गलियारे की पहल की।

कोरा **[6]** के अनुसार, भारत के अन्य देशों के साथ संबंध अपेक्षाकृत स्थिर रहे हैं, किंतु चीन के साथ संबंधों में तनाव का प्रमुख कारण भारत–चीन सीमा विवाद तथा चीन की क्षेत्रीय विस्तार की नीति है। वर्ष 2017 में डोकलाम में उत्पन्न सैन्य गतिरोध ने भारत–चीन संबंधों में नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर दीं। इस गतिरोध को कम करने के लिए आयोजित शिखर सम्मेलन में महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए, जिसमें चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शामिल थे। तथापि, वर्ष 2020 में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एल. ए. सी.) पर चीन के आक्रामक व्यवहार के कारण दोनों देशों के संबंध पुनः तनावपूर्ण हो गए।

सेठी और सोनकर **[7]** के अनुसार, वर्ष 1991 में भारत द्वारा वैश्वीकरण की नीति अपनाने के बाद देश में विदेशी कंपनियों का आगमन हुआ। प्रतिवर्ष ये विदेशी कंपनियाँ भारत से लगभग 15 से 20 लाख करोड़ रुपये तक का आर्थिक लाभ प्राप्त कर रही हैं, जिसमें अकेले चीन के हिस्से लगभग पाँच लाख करोड़ रुपये प्रतिवर्ष बताए जाते

हैं। यह स्थिति चीन पर भारत की आर्थिक निर्भरता को दर्शाती है। इस निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने मेड इन इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत जैसी पहलों को प्रोत्साहित किया।

घोष **[8]** के अनुसार, चीन और पाकिस्तान के बीच बढ़ती निकटता भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक चुनौती बन गई है, क्योंकि पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी माना जाता है। चीन द्वारा पाकिस्तान को सैन्य और परमाणु सहयोग प्रदान किया जाना भारत के लिए चिंता का विषय है। परिणामस्वरूप, चीन–पाकिस्तान सहयोग भारत की सुरक्षा और रणनीतिक हितों के संदर्भ में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

जमशेद एट अल. **[9]** के अनुसार, स्वतंत्रता के बाद से ही भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर और सीमा विवाद को लेकर निरंतर तनाव बना हुआ है। वर्तमान में चीन कश्मीर मुद्दे के संदर्भ में एक जटिल स्थिति में दिखाई देता है, क्योंकि वह अपने पश्चिमी क्षेत्रों के विकास तथा क्षेत्रीय प्रभाव को बढ़ाने के लिए सी. पी. ई. सी. के माध्यम से हिंद महासागर तक अपनी पहुँच को सुदृढ़ करना चाहता है।

1.2 उद्देश्य

- भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों में अस्थिरता तथा चीन पर भारत की निर्भरता का अध्ययन करना।
- भारत–चीन के आर्थिक संबंधों को प्रभावित करने वाले विवादित कारकों और चुनौतियों का अध्ययन करना।
- भारत और चीन के गहरे आर्थिक संबंधों के बावजूद उत्पन्न हो रहे आपसी अविश्वास के कारणों का अध्ययन करना।

1.3 परिकल्पना

- **H1:** भारत–चीन के संबंध सीमा विवाद के कारण नकारात्मक रूप से प्रभावित हुए हैं तथा चीन की पाकिस्तान के साथ बढ़ती निकटता ने भारत–चीन संबंधों में अविश्वास की स्थिति उत्पन्न की है।
- **H2:** पिछले कुछ वर्षों में चीन पर भारत की निर्भरता तेजी से बढ़ी है, जो भारत–चीन के द्विपक्षीय व्यापार में असंतुलन और अस्थिरता का एक प्रमुख कारण है। यह स्थिति भारत को वैश्विक कूटनीतिक स्तर पर अपेक्षाकृत कमजोर बनाती है।

2. अनुसंधान पद्धति

इस शोध में भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंधों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें भारत–चीन के आर्थिक क्षेत्र में व्यापारिक असंतुलन, आर्थिक निर्भरता तथा उभरती चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। इन पहलुओं के अध्ययन के लिए वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध "भारत–चीन के आर्थिक संबंधों में व्यापारिक असंतुलन, निर्भरता और चुनौतियाँ" मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इन स्रोतों में विभिन्न तथ्य, आँकड़े, दस्तावेज, रिपोर्ट, सरकारी अभिलेख तथा शोध पत्रिकाएँ शामिल हैं, जिनका तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

- **वर्णनात्मक शोध पद्धति:** इस पद्धति के अंतर्गत भारत और चीन के आर्थिक संबंधों से संबंधित द्विपक्षीय व्यापार, आयात–निर्यात के आँकड़े, आर्थिक सहयोग आदि का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।
- **विश्लेषणात्मक शोध पद्धति:** इस पद्धति के अंतर्गत भारत–चीन के द्विपक्षीय व्यापार में असंतुलन, भारत की चीन पर आर्थिक निर्भरता, आर्थिक निवेश, विवादित कारकों तथा संबंधित समस्याओं का विश्लेषण किया गया है।
- **डेटा के स्रोत:** प्रस्तुत शोध में भारत–चीन के आर्थिक संबंधों में व्यापारिक असंतुलन, निर्भरता और चुनौतियों के अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें प्रमुखतः निम्न शामिल हैं-
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाएँ
- नीति अनुसंधान संस्थानों (जैसे ORF, Brookings, RAND) के प्रकाशन
- प्रमुख समाचार पत्र एवं विश्लेषणात्मक लेख
- सरकारी दस्तावेज **[2]**
- अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टें
- सी. आई. ए. रिपोर्ट

3. भारत और चीन के आर्थिक संबंधों के समक्ष आने वाली चुनौतियां

भारत और चीन के मध्य अनेक द्विपक्षीय समझौतों के बावजूद सीमा विवाद दोनों देशों के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संबंधों को निरंतर प्रभावित करता रहा है। विशेष रूप से गलवान घाटी में हुई सैनिक झड़प के पश्चात भारत–चीन के द्विपक्षीय संबंधों में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई। इस घटना के प्रतिउत्तर में भारत सरकार ने कई चीनी इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों तथा मोबाइल एप्लिकेशनों पर प्रतिबंध लगा दिया। परिणामस्वरूप, इस कदम का प्रत्यक्ष प्रभाव भारत और चीन के आर्थिक संबंधों पर पड़ा, जिससे दोनों देशों को आर्थिक स्तर पर महत्वपूर्ण क्षति का सामना करना पड़ा। तथापि, पारस्परिक आवश्यकताओं और क्षेत्रीय स्थिरता को ध्यान में रखते हुए भारत और चीन ने एल. ए. सी. से संबंधित मुद्दों के समाधान के लिए पुनः संवाद स्थापित करने और सहमति बनाने की दिशा में प्रयास किए। इन प्रयासों का प्रमुख उद्देश्य दोनों देशों के बीच उत्पन्न तनाव को कम करना तथा सीमा क्षेत्रों में स्थिरता बनाए रखना था **[10]**। इसके बावजूद, भारत और चीन के मध्य जारी सीमा विवाद आर्थिक तथा अन्य द्विपक्षीय संबंधों के लिए अभी भी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बना हुआ है। वर्तमान परिस्थितियों में, दोनों देशों के बीच चल रहे सीमा संघर्ष के कारण स्थायी और सुदृढ़ द्विपक्षीय संबंधों की स्थापना चुनौतीपूर्ण प्रतीत होती है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन और पाकिस्तान की बढ़ती मित्रता, चीन द्वारा पाकिस्तान को समय-समय पर आर्थिक सहायता तथा हथियार उपलब्ध कराना, भारत के लिए एक निरंतर चिंता का विषय बना हुआ है। पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी माना जाता है, इसके बावजूद भी चीन द्वारा पाकिस्तान का समर्थन किया जाता है, जिससे भारत के लिए चीन पर विश्वास करना कठिन हो जाता है। चीन की वन बेल्ट वन रोड परियोजना में छह कॉरिडोर शामिल हैं, जिनमें से एक सी. पी. ई. सी. है। इस परियोजना के उद्घाटन के लिए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने 20 अप्रैल 2015 को पाकिस्तान की यात्रा की। इस परियोजना का उद्देश्य पाकिस्तान और चीन के राजनीतिक संबंधों को सुदृढ़ करना तथा चीन के व्यापक रणनीतिक उद्देश्यों को पूरा करना है। इस परियोजना के अंतर्गत काशगर को पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह से जोड़ा गया है। चीन के लिए सी. पी. ई. सी. उसकी व्यापक रणनीतिक योजना का एक महत्वपूर्ण भाग है, जिसके माध्यम से वह हिंद महासागर तक अपनी पहुँच और प्रभाव को बढ़ाना चाहता है तथा पाकिस्तान के आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहित करना चाहता है। भारत ने इस परियोजना का विरोध किया है, क्योंकि इससे भारत की सुरक्षा और राष्ट्रीय हित प्रभावित होने की संभावना है, विशेष रूप से इसलिए कि कश्मीर का एक भाग इस परियोजना के अंतर्गत आता है **[11]**। इसके अतिरिक्त, सी. पी. ई. सी. का समुद्री विस्तार भी भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक चुनौती के रूप में देखा जाता है। चीन की "String of Pearls" नीति के अंतर्गत श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार और पाकिस्तान में बंदरगाहों के विकास के लिए व्यापक निवेश किया जा रहा है। इस रणनीति के माध्यम से चीन हिंद महासागर क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार करना चाहता है, जिसके कारण भारत के संदर्भ में सी. पी. ई. सी. एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बन गया है **[12]**।

अतः भारत और चीन के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक संबंधों में अस्थिरता का एक प्रमुख कारण चीन की नीतियाँ और परियोजनाएँ हैं, जिन्हें भारत के हितों के विरुद्ध माना जाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चीन ने कई अवसरों पर पाकिस्तान के संदर्भ में भारत के विपरीत रुख अपनाया है। विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन द्वारा पाकिस्तान का समर्थन किया जाता रहा है, चाहे वह आतंकवाद का मुद्दा हो या कश्मीर का प्रश्न। कई अवसरों पर चीन ने अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग भारत के हितों के विपरीत किया है। इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर चीन का रुख प्रायः भारत के प्रति निष्पक्ष न होकर पाकिस्तान के पक्ष में दिखाई देता है **[13]**। स्वतंत्रता के बाद से ही भारत और पाकिस्तान के संबंध तनावपूर्ण रहे हैं, और ऐसे में चीन द्वारा पाकिस्तान को निरंतर सहयोग प्रदान किया जाना भारत–चीन संबंधों में अविश्वास की स्थिति को और अधिक बढ़ाता है। हाल के वर्षों में भारत में चीन से संबंधित साइबर जासूसी और डेटा चोरी के मामले भी सामने आए हैं। वर्ष 2020–21 में द इकोनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, चीनी कंपनी झेनहुआ डेटा सूचना प्रौद्योगिकी पर भारत के हजारों नागरिकों के डेटा की निगरानी और संग्रह करने के आरोप लगे थे, जिनमें सरकारी अधिकारी, सैन्य अधिकारी तथा उद्योगपति शामिल थे **[14]**। इस प्रकार साइबर जासूसी और डेटा चोरी से जुड़े मामले भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा

और हितों के लिए गंभीर चुनौती के रूप में देखे जाते हैं। गलवान घाटी की घटना तथा साइबर जासूसी के आरोपों के बाद भारत ने चीन के विरुद्ध कई प्रतिबंधात्मक कदम उठाए, जिनमें अनेक चीनी मोबाइल एप्लिकेशनों और वेबसाइटों पर प्रतिबंध भी शामिल था। परिणामस्वरूप, चीन की भारत-विरोधी नीतियों और विभिन्न विवादों के कारण भारत–चीन के आर्थिक संबंध भी समय-समय पर प्रभावित होते रहे हैं, और इस स्थिति ने दोनों देशों के बीच अविश्वास को और अधिक गहरा किया है।

4. भारत-चीन के द्विपक्षीय व्यापार में असंतुलन

भारत और चीन के आर्थिक संबंधों की ओर दृष्टि डालें तो दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में तीव्र वृद्धि हुई है। वर्ष 2003 में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार 7.6 बिलियन डॉलर तक पहुँचा, जबकि 2004 में यह बढ़कर 13.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। वर्ष 2003 में चीन ने दक्षिण एशिया में सबसे अधिक व्यापार भारत के साथ किया था **[15]**।

तालिका 1: चीन का 2003 में दक्षिण एशिया में व्यापार

क्रमांक	**देश**	**चीन के साथ व्यापार (%)**
1	भारत	65.08%
2	पाकिस्तान	20.86%
3	बांग्लादेश	1.73%
4	श्रीलंका	1.2%
5	नेपाल	1.1%
6	मालदीव	0.03%

तालिका 1 से स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि दक्षिण एशिया में भारत ने चीन के साथ इतना व्यापार किया, जो क्षेत्र के अन्य देशों के कुल व्यापार की तुलना में भी अधिक था। आर्थिक संबंधों के इस प्रकार सुदृढ़ होने से दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ने तथा विवादों में कमी आने की संभावना भी व्यक्त की गई। चीन वर्ष 2001 में विश्व व्यापार संगठन (WTO) का सदस्य बन गया था। इसके पश्चात चीन ने वैश्विक स्तर पर अपने व्यापार का तीव्र विस्तार किया, जिसके परिणामस्वरूप 2023 तक चीन की अर्थव्यवस्था विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई। इसी अवधि में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार भी तीव्र गति से बढ़ा, किंतु इसके साथ-साथ इस व्यापार में असंतुलन भी बढ़ता गया।

तालिका 2: भारत-चीन द्विपक्षीय व्यापार (2015–2023)

वर्ष	भारत का चीन को निर्यात (अरब USD)	भारत का चीन से आयात (अरब USD)	कुल व्यापार (अरब USD)	व्यापार घाटा (अरब USD)
2015	9.5	61.7	71.2	52.2
2020	17.1	65.3	82.4	48.2
2021	21.2	87.5	108.7	66.3
2022	17.5	94.2	111.7	76.7
2023	16.7	97.5	114.2	80.8

भारत और चीन के द्विपक्षीय व्यापार में उपरोक्त (तालिका 2) आँकड़ों के अनुसार लगातार असंतुलन में वृद्धि होती जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप भारत का व्यापारिक घाटा निरंतर बढ़ता जा रहा है। वर्ष 2020 के दौरान कोविड-19 महामारी के कारण दोनों देशों के व्यापार पर प्रभाव पड़ा, जिससे व्यापारिक गतिविधियों में गिरावट देखी गई। परंतु 2021 से 2023 के बीच भारत और चीन के बीच व्यापार पुनः तेजी से बढ़ा और लगभग 114.2 अरब डॉलर तक पहुँच गया, जिसमें भारत का व्यापारिक घाटा लगभग 80.8 अरब डॉलर था। इस व्यापारिक

असंतुलन का प्रमुख कारण दोनों देशों के बीच व्यापार में शामिल वस्तुओं की प्रकृति है। भारत चीन को मुख्यतः लोहा, खनिज ईंधन, कॉटन टेक्सटाइल, समुद्री उत्पाद आदि कच्चा माल निर्यात करता है, जबकि चीन भारत को इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, मशीनरी, रसायन, दवाइयों के लिए कच्चे तत्व, प्लास्टिक से बने उत्पाद आदि निर्यात करता है, जिनमें तैयार माल तथा तकनीकी उपकरण शामिल होते हैं। चीन द्वारा निर्यात किए जाने वाले ये उत्पाद अपेक्षाकृत अधिक मूल्यवान और तकनीकी रूप से उन्नत होते हैं, जबकि भारत द्वारा निर्यात किए जाने वाले कच्चे माल का मूल्य अपेक्षाकृत कम होता है **[16]**।

संयुक्त राज्य शांति संस्थान (USIP) के अनुसार, वर्ष 2023 में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार 136.22 अरब डॉलर तक पहुँच गया, जो 2022 की तुलना में लगभग 1.5% अधिक था। तथापि, भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती चीन के साथ व्यापार में बढ़ता असंतुलन है। चीन भारत को अधिक मात्रा में निर्यात करता है, जबकि भारत का निर्यात अपेक्षाकृत कम है, जिसके कारण कुछ क्षेत्रों में भारत की चीन पर निर्भरता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वर्ष 2005 में भारत ने चीन को लगभग 10 अरब डॉलर का निर्यात किया था, जो 2024 तक बढ़कर लगभग 14.9 अरब डॉलर तक पहुँच गया। इसी अवधि में चीन से भारत का आयात 100 अरब डॉलर से अधिक हो गया। ये आँकड़े भारत की चीन पर बढ़ती आर्थिक निर्भरता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। ऐसी स्थिति में चीन द्वारा भारत पर संभावित आर्थिक दबाव को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता, जो वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति को प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, वर्ष 2017 में डोकलाम सैन्य गतिरोध के दौरान चीन पर भारत की आर्थिक निर्भरता एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बनी थी **[17]**।

4.1 चीन से निर्भरता कम करने हेतु भारत के प्रयास

चीन पर आर्थिक क्षेत्र में बढ़ती निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा आर्थिक और रणनीतिक स्तर पर कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। भारत ने आत्मनिर्भरता के मार्ग को अपनाते हुए मुख्यतः 14 क्षेत्रों में पी. एल. आई. योजना की शुरुआत की। इसमें बड़े स्तर पर इलेक्ट्रॉनिक्स, मेडिकल डिवाइस, तकनीकी उपकरण, नेटवर्किंग उत्पादन, सौर पैनल, कच्चे माल आदि को शामिल किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य इन उत्पादों का निर्माण भारत में ही करना है, जिससे भारत को मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में विश्व और एशिया में प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके तथा विदेशी कंपनियों को भारत में उत्पादन के लिए आकर्षित किया जा सके। इससे चीन पर भारत की निर्भरता को कुछ हद तक कम करने का प्रयास किया गया है **[18]**। इसके परिणामस्वरूप कई विदेशी कंपनियों ने भारत में मैन्युफैक्चरिंग स्थापित करने के प्रति रुचि दिखाई, जो भारत की अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत हैं।

इस चुनौती के समाधान के लिए भारत ने अन्य देशों के साथ आर्थिक और रणनीतिक सहयोग बढ़ाने का भी निर्णय लिया। इसी संदर्भ में भारत ने यूरोपीय संघ (EU) के साथ तकनीकी विकास तथा कच्चे माल की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रणनीतिक संबंध स्थापित करने की दिशा में कदम बढ़ाए। इस संदर्भ में यूरोपीय आयोग के प्रतिनिधि मरौश शेफकोविक और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से बैठक आयोजित की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य दोनों पक्षों के बीच सहयोग को सुदृढ़ करना तथा चीन पर निर्भरता को कम करना था। इसका एक कारण यह भी है कि चीन की व्यापारिक नीतियाँ अधिक आक्रामक होती जा रही हैं और कई देशों की निर्भरता चीन पर अत्यधिक बढ़ गई है। साथ ही, चीन द्वारा आवश्यक तकनीक और खनिजों के निर्यात पर भी प्रतिबंध लगाए जाने की घटनाएँ सामने आई हैं **[19]**।

भारत केवल यूरोप के साथ ही नहीं, बल्कि जापान, अमेरिका आदि देशों के साथ भी अपनी रणनीतिक साझेदारी और आर्थिक सहयोग को बढ़ा रहा है, ताकि चीन पर निर्भरता को कम किया जा सके। इसी प्रकार अन्य देश भी चीन पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए वैकल्पिक साझेदारियों और आर्थिक सहयोग को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।

हालाँकि, भारत द्वारा चीन पर निर्भरता कम करने के लिए कई प्रयास किए गए हैं, लेकिन पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त नहीं हो सकी है। इसका प्रमुख कारण यह है कि भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2019, 2020 और 2021 के दौरान भी तेजी से बढ़ा है। इसके अतिरिक्त, दोनों देशों के आर्थिक संबंध कई क्षेत्रों में गहराई से

जुड़े हुए हैं, जिसके कारण आपूर्ति के संदर्भ में चीन के स्थान पर किसी अन्य देश को विकल्प के रूप में अपनाना कई बार महँगा तथा कुछ क्षेत्रों में कठिन प्रतीत होता है **[20]**। वर्ष 2000 के बाद से भारत और चीन के व्यापारिक संबंधों में निरंतर वृद्धि देखी गई है, जिसके कारण इन संबंधों में अचानक कमी लाना भारत के लिए एक बड़ी चुनौती है। परिणामस्वरूप, कुछ क्षेत्रों में भारत को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अभी भी चीन पर आंशिक रूप से निर्भर रहना पड़ता है।

5. निष्कर्ष

निःसंदेह भारत और चीन के द्विपक्षीय व्यापार में सन 2000 से लेकर अब तक तीव्र वृद्धि हुई है। भारत–चीन के द्विपक्षीय व्यापार की शुरुआत से ही चीन भारत के बाजारों को अपने उत्पादों के निर्यात के लिए महत्वपूर्ण मानता रहा है, जो चीन की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान करता है। हालांकि, इस व्यापार में असंतुलन भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कोविड-19 महामारी के दौरान भारत और चीन के व्यापारिक संबंधों में कुछ कमी आई, परंतु महामारी का प्रभाव कम होने के बाद 2021 से 2023 के बीच दोनों देशों के बीच व्यापार पुनः तेज़ी से बढ़ा, जिसमें भारत का व्यापारिक घाटा लगभग 80.8 अरब डॉलर तक पहुँच गया। व्यापारिक घाटे में निरंतर वृद्धि भारत की चीन पर बढ़ती निर्भरता को दर्शाती है। इसी निर्भरता को कम करने के लिए भारत ने मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया, जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। दूसरी ओर, भारत–चीन संबंधों में सहयोग और अविश्वास दोनों एक साथ दिखाई देते हैं। जहाँ सहयोग का प्रमुख कारण दोनों देशों के बीच बढ़ता द्विपक्षीय व्यापार है, वहीं अविश्वास के प्रमुख कारण सीमा विवाद, सी. पी. ई. सी., तथा चीन–पाकिस्तान की रणनीतिक साझेदारी जैसे विवादित कारक हैं, जिनके कारण दोनों देशों के संबंध समय-समय पर अस्थिर बने रहते हैं।

अतः इन तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि भारत और चीन के बीच उत्पन्न असंतुलन और अविश्वास केवल व्यापारिक अंतर का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सीमा विवाद, चीन की विस्तारवादी नीतियों तथा भारत के हितों के प्रतिकूल मानी जाने वाली चीन की परियोजनाओं का भी परिणाम है। ऐसी स्थिति में भारत के लिए आवश्यक है कि वह चीन के साथ संबंधों के संदर्भ में अपनी विदेश नीति को और अधिक सुदृढ़ बनाए तथा चीन पर निर्भरता को कम करने के लिए प्रभावी नीतिगत कदम उठाए।

नीतिगत सुझाव

- भारत को अपने व्यापारिक घाटे को कम करने के लिए केवल कच्चे माल का निर्यात करने के स्थान पर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तथा तकनीकी उत्पादों जैसे उच्च मूल्य वाले उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देना चाहिए तथा उत्पादों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
- भारत को अपनी उत्पादन क्षमता का विस्तार करना चाहिए तथा बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों को देश में स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे विदेशों से आयात पर निर्भरता कम हो सके। इस दिशा में भारत सरकार की पी. एल. आई. योजना एक महत्वपूर्ण पहल है।
- भारत को चीन के अतिरिक्त अन्य देशों के साथ भी अपने राजनीतिक, आर्थिक और व्यापारिक सहयोग को बढ़ाना चाहिए।
- भारत को अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में अपने बजट को बढ़ाना चाहिए, ताकि नई तकनीकों का विकास हो सके और भारत तकनीकी क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सके।

संदर्भ सूची

1. Agency, C. I. (2026). *The world factbook: China.* Retrieved on January 4, 2026 https://www.cia.gov/the-world-factbook/countries/china
2. No Name. *India at a glance.* KnowIndia. Retrieved on January 4, 2026. https://knowindia.india.gov.in/profile/india-at-a-glance.php

3. Kalyankar, A. V., Jordan, Z., & Schuchert, B. (2023). On the Precipice: Crisis and Confrontation on the China-India Border. In *China's Use of Armed Coercion*, 164-201. Routledge. https://doi.org/10.4324/9781003387770
4. Agarwal, M., & Ghosh, M. (2011). An India–China FTA: Potential Economic Implications for the Asian and the North American Economies. *South Asia Economic Journal*, *12*, 185-220. https://doi.org/10.1177/139156141101200201
5. सिंह, आर. पी. (2017). भारत के बढ़ते कद से चिंतित चीन. दैनिक जागरण.
6. Kaura, V. (2020). India's relations with China from the Doklam crisis to the Galwan tragedy. *India Quarterly*, *76*, 501-518. https://doi.org/10.1177/0974928420961768
7. सेठी, अर्चना, & सोनेकर, बी. एल. (2020). भारतीय अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भर भारत. International *Journal of Advances in Social Sciences*, *8*, 191-195.
8. Ghosh, P. (2021). *International Relations* (5th ed.). PHI Learning Private Limited. ISBN-13. 978-9389347593
9. Jamshad, U., Abdullah, M., & Jahangir, A. (2022). Chinese Stance on Kashmir Dispute: An Over View. *Journal of Development and Social Sciences*, *3*, 322-329. https://doi.org/10.47205/jdss.2022(3-IV)31
10. Khan, M. M., & Munir, A. (2025). India-China Trade Relations: Policy Impacts and Pathways to Economic Resilience. *Policy Journal of Social Science Review*, *3*, 399-408.
11. Hussain, M., Ramzan, H., & Singh, S. (2024). China–Pakistan Economic Corridor and Its Impact on India. *India Quarterly*, *80*, 503-514. https://doi.org/10.1177/09749284241285121
12. Manhas, N., Manhas, N. S., & Yadav G, H. (2025). Shifting Power Dynamics in South Asia: The Geopolitical Impact of China's CPEC on Regional Rivalries. *Discover Global Society*, *3*, 89. https://doi.org/10.1007/s44282-025-00227-z
13. Jan, M. W., & Ahmed, Z. S. (2022). Internationalizing the Kashmir dispute: an analysis of India and Pakistan's statements at the United Nations General Assembly. *India Review*, *21*, 546-575. https://doi.org/10.1080/14736489.2022.2131124
14. No Name. Zhenhua Data leak: From Narendra Modi to Ratan Tata, here's the list of prominent Indians China spied on. *The Economic Times* (14 September 2014), Retrieved on January 17, 2026. https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/zhenhua-data-leak-from-narendra-modi-to-ratan-tata-heres-list-of-prominent-indians-china-spied-on/articleshow/78107743.cms
15. Singh, S. (2005). China-India Bilateral Trade: Strong Fundamentals, Bright Future. *China Perspectives*, *62*, 1-13. https://doi.org/10.4000/chinaperspectives.2853
16. Chaudhary, S. (2025). India-China Trade Dynamics: Dependency, Deficit, and Decoupling Trends. *Social Science Journal for Advanced Research*, *5*, 65–71. https://doi.org/10.5281/zenodo.15597981
17. Singh, S. (2025, June 22). How vulnerable is India to Chinese economic coercion? *Indian Strategic Studies*. Retrieved on January 17, 2026. https://www.strategicstudyindia.com/2025/06/how-vulnerable-is-india-to-chinese.html
18. Debroy, B., & Sinha, A. (2024). *India's Economic Realignment. Rising to the China Challenge: Sino-Indian Ties Under Modi*. Observer Research Foundation, New Delhi.
19. Bureau, F. E. (January 20, 2025). India to work with EU to reduce China dependence. *Financial Express*. Retrieved on January 10, 2026. https://www.financialexpress.com/world-news/india-to-work-with-eu-to-reduce-china-dependence/3719831/
20. Verma, R. (2023). India's Economic Decoupling from China: A Critical Analysis. *Asia Policy*, *18*, 143-166. https://doi.org/10.1353/asp.2023.0011